ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष-18 अंक- 3 मई-I-2018 (पाक्षिक) माउण्ट आबू Rs. 10.00

'अद्भुत मातृत्व' विषय पर अद्भुत सम्मेलन

★ **देश के विभिन्न प्रान्तों से 300 से भी अधिक चिकित्सकों ने लिया भाग** ★ **आध्यात्मिक मूल्य के साथ करें कार्य - डॉ. मल्होत्रा**

ओ.आर.सी.-गुरूग्राम। ब्रह्माकुमारीज़ के ओ.आर.सी. में प्रसूति एवं स्त्रीरोग विशेषज्ञ सामाजिक महासंघ (फोग्सी) के प्रथम राष्ट्रीय सम्मेलन के आयोजन में आध्यात्मिकता द्वारा कुशल मातृत्व विषय पर **ओ.आर.सी. निदेशिका ब्र.कु. आशा** ने कहा कि बच्चे पर सबसे पहला प्रभाव माँ का ही पड़ता है। माँ जैसा चाहे बच्चे को वैसे संस्कार दे सकती है। इसका उदाहरण हमारे शास्त्रों में अभिमन्यु के रूप में है। माँ जैसा सुनती है, जैसा सोचती है, बच्चे का सीधा सम्बन्ध उससे जुड़ा होता है। उन्होंने कहा कि चिकित्सक स्वयं के जीवन में श्रेष्ठ मूल्यों को धारण कर दूसरों को प्रेरित कर सकते हैं।

जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा ब्र.कु. शिवानी ने कहा कि आध्यात्मिकता हमें एकता के सूत्र में पिरोती है। हमें दुनिया को बदलने के लिए मातृ शक्ति का विकास करना होगा। आज सभी दर्द में हैं, वो ये नहीं जानते कि परिवर्तन कैसे होगा। हीलिंग के लिए हमें अपने विचारों पर ध्यान देना होगा।

फोग्सी की अध्यक्षा डॉ. जयदीप मल्होत्रा ने कहा कि पहले हमें ये सोचना चाहिए कि हम जो कुछ कर रहे हैं, उसका हमारे जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है, साथ ही जहाँ भी कर रहे हैं, उनको भी हम प्रभावित कर रहे हैं। जब हम आध्यात्मिक जागृति के साथ कार्य करेंगे, तब ही हम चिकित्सा के क्षेत्र में एक सकारात्मक बदलाव की उम्मीद कर सकते हैं।

ब्र.कु. आशा के साथ दीप प्रज्वलित करते हुए डॉ. दिनेश सिंघल, डॉ. जयदीप मल्होत्रा, ब्र.कु. शिवानी तथा अन्य मेहमान।

बालरोग विशेषज्ञ डॉ. दिनेश सिंघल ने कहा कि आध्यात्मिक शांति से ही सम्पूर्ण स्वास्थ्य प्राप्त हो सकता है। इस अवसर पर मनोरोग विशेषज्ञ डॉ. अवधेश शर्मा एवं जी.बी. पन्त हॉस्पिटल के हृदयरोग विशेषज्ञ डॉ. मोहित गुप्ता ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम में महिलाओं के जीवन से जुड़ी अनेक समस्याओं के बारे में चर्चा हुई। आये हुए विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा माता और शिशु के सम्पूर्ण बौद्धिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी दी गई।

परमात्मा से जुड़ने से ही होता, आंतरिक शक्ति का विकास

कार्यक्रम के दौरान प्रबुद्ध जनों को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. अनुज।

दिल्ली-डिफेन्स कॉलोनी। प्रमुख अति विशिष्ट जनों के लिए एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें ध्यान के साथ अपने अंदर की शक्ति को बढ़ाने हेतु राजयोग की उपयोगिता पर ज़ोर दिया गया।

'इनहेन्स योर लेटेन्ट इनर स्प्रिचुअल स्ट्रेन्थ थ्रू राजयोगा' पर मोटीवेशनल ट्रेनर ब्र.कु. अनुज ने कहा कि जब हमारे अपने कम्पयूटर पर बहुत सारी फाइलें खुली होती हैं तो कम्प्यूटर की स्पीड कम हो जाती है, ठीक उसी प्रकार जब हमारे मन के कम्प्यूटर स्क्रीन पर बहुत सारी बातें आ जाती हैं तो मन भारी हो जाता है। अब उसमें तो आप कम्प्यूटर को शट डाउन भी कर सकते हैं, लेकिन मन में इतने सारे फोल्डर और फाइल जैसे दु:ख, दर्द, तकलीफ, परेशानी, टकराव, की बातें खुली हैं, तो आप हमेशा भारी महसूस करते हैं, मन हल्का नहीं रहता है। अगर हमारे मन में दूसरों के अलावा अपनी बातें हों, अपनी बातें मतलब मैं कौन हूँ, मेरा कौन है, मैं किसलिए यहाँ आया हूँ, ये याद रहे तो हमारा मन हल्का हो जायेगा और फास्ट तरीके से बिना थके अपना सारा काम कर लेंगे। साथ ही परमात्मा के बारे में बताते हुए कहा कि वो हमारे मन को नरीशमेंट करते हैं, चार्ज करते हैं तथा हमारी ऊर्जा को बढ़ाते भी हैं, लेकिन उसके बारे में हमें पता नहीं है। अगर उसके बारे में पता चल जाये तो हम अपनी ऊर्जा को अच्छा बना कर रख सकते हैं किसी भी परिस्थिति में। कार्यक्रम में आये मेहमानों के लिए पैनल डिस्कशन का आयोजन किया गया। साथ ही कार्यक्रम के दौरान विधिपूर्वक सभी को राजयोग की गहन अनुभूति भी कराई गई।

सर्व धर्म का एक ही मकसद, सद्भावना

जावद-म.प्र.। 'सर्वधर्म सद्भावना सम्मेलन' के आयोजन में सर्व धर्म प्रतिनिधियों सहित विश्व हिन्दू परिषद एवं गायत्री परिवार के नगर अथवा जिला प्रमुख धर्माचार्य शरीक हुए।

इस अवसर पर ब्र.कु. सुरेन्द्र ने कहा कि हम सभी का उद्देश्य समाज में सद्भावना बनाये रखना है। वास्तव में हम सभी एक परम ऊर्जा के साथ जुड़े हुए हैं, चाहे हम अपनी-अपनी आस्था के अनुरूप याद व प्यार करते हैं तथा अलग अलग नामों से पुकारते भी हैं। लेकिन हमारा आपस में गहरा नाता है, ये बात अगर हम ध्यान में रखते हैं, तो हम सभी एकता के सूत्र में पिरोने का कार्य बखूबी कर सकते हैं। ये आध्यात्मिकता के द्वारा ही संभव है।

ब्र.कु. दिव्या ने कहा कि हम सभी आपस में भाई-भाई हैं, इस स्मृति को परिपक्व बनाकर ही समाज में शांति व समरसता लाई जा सकती है।

कार्यक्रम की अध्यक्षा ब्र.कु. सविता ने कहा कि हमें धर्म और जाति की दरो-दीवार से ऊपर उठकर आध्यात्मिक बनना होगा। इसमें ही सर्व धर्मों का सार सुख, शांति, प्रेम एवं सद्भावना समाहित है। इसके लिए हम अपने साथ बैठकर बातें करें कि परमात्मा ने हमें इस धरा पर शांति का माहौल बनाने के लिए भेजा है, तो हम उन बातों पर खरे उतरें, तभी हमारा जीवन भी सार्थक होगा और समाज का भी कल्याण होगा।

'सबका मालिक एक...फिर क्यों बंटा हुआ संसार है...' इस मधुर गीत के गुंजन के साथ दीप प्रज्वलित कर सभी प्रतिनिधियों ने कार्यक्रम का शुभारंभ किया। तत्पश्चात नन्हें बालकों के एक ग्रुप ने सभी धर्म प्रतिनिधियों का स्वांग रचकर एक सुन्दर सद्भावना नृत्य नाटिका प्रस्तुत की जिसमें कु. रिद्धि, गुनगुन, परी, प्रीत, आराध्या एवं अनुष्का ने भाग लिया ।

कु. अवनि ने सुन्दर स्वागत नृत्य प्रस्तुत किया। ब्र.कु. महानन्दा एवं ब्र.कु. श्रुति ने सभी मंचासीन धर्माचार्यों का शॉल, श्रीफल एवं गुलदस्ते भेंट कर सम्मान किया। प्रत्येक धर्म के प्रतिनिधियों जिनमें जैन समाज से नरेन्द्र गांधी, बोहरा समाज से युसुफ भाई, विश्व हिन्दू परिषद से बाबूलाल नागदा, सिक्ख समाज से हरभजन सिंह सलूजा, हिन्दू समाज से रामलाल पाटीदार, मुस्लिम समाज से शहर काजी सैय्यद मोहम्मद आकील, गायत्री परिवार से कमल एरन एवं ईसाई समुदाय से कार्मल कॉन्वेंट स्कूल की प्रिंसीपल सिस्टर जया सीटीसी एवं नगर पंचायत अध्यक्षा श्रीमती सारिका वोरा आदि ने अपनी शुभकामनाएं व्यक्त की।

कार्यक्रम में ब्र.कु. सविता के साथ दीप प्रज्वलित करते हुए सर्व धर्म प्रतिनिधिगण।